प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 6 (2019–20)

हिन्दी–अ कोड (002)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड – क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

हमारा जीवन पाखंडमय बन गया है और हम इसके बिना नहीं रह सकते हैं। अपने सार्वजनिक जीवन अथवा निजी जीवन में कहीं भी देखें हम एक–दूसरे को छलने की कला का खुलकर उपयोग करते हैं, इसके बावजूद यह विश्वास करते हैं कि हम ऐसा कुछ भी नहीं कर रहे हैं। हम इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं जिसकी उस अवसर पर कोई आवश्यकता नहीं होती। हम किसी बात को यह जानते हुए भी वह सही व सत्य नहीं है लेकिन उसके प्रति निष्ठा या विश्वास इस तरह प्रकट करते हैं जैसे हमारे लिए वही एकमात्र सत्य है। हम सब यह इसलिए सरलता से कर पाते हैं क्योंकि आज पाखंड व दिखावा हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। आज हममें से अधिकांश लोगों की स्थिति 'मुँह में कुछ और' मन में कुछ और वाली बन गई है।

1. हमने जीवन का अभिन्न अंग किसे बना लिया है? 2
उत्तर : हमने पाखंड और दिखावे को जीवन का अभिन्न अंग बना लिया है।
2. छलने की कला का हम किस प्रकार उपयोग करते हैं और क्या विश्वास करते हैं? 2
उत्तर : हम छलने की कला का खुलकर उपयोग करते हैं और यह विश्वास करते हैं कि हम ऐसा कुछ भी नहीं कर रहे हैं।
3. यह जानते हुए भी कि बात गलत है, हम किस तरह उसके प्रति निष्ठा और विश्वास प्रकट करते हैं? 2
उत्तर : यह जानते हुए भी कि बात गलत है, हम उसके प्रति निष्ठा और विश्वास इस तरह प्रकट करते हैं जैसे हमारे लिए वही एकमात्र सत्य है।
4. गद्यांश में 'मुँह में राम बगल में छुरी'–इस कहावत का अर्थ किस वाक्य से पता चलता है? 1
उत्तर : मुँह में कुछ और मन में कुछ और।
5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1
उत्तर : पाखंड व दिखावा।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 7

हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती,
लहरों से डरकर नैया पार नहीं होती।
नन्हीं चीटीं जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोता खोर लगाता है,
जा–जाकर खाली हाथ लौट वह आता है।
मिलते न सहज मोती पानी में,
बढ़ता दुगुना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी खाली उसकी हर बार नहीं होती,
हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती।।

1. हमारी रगों में कौन साहस भरता है? 2
उत्तर : हमारी रगों में मन का विश्वास साहस भरता है।
2. चींटी की मेहनत क्यों बेकार नहीं होती हैं? 2
उत्तर : चींटी की मेहनत इसलिए बेकार नहीं होती है क्योंकि वह बार–बार प्रयास करके दाना ले जाने में सफल होती है।
3. 'सिंधु' शब्द का अर्थ लिखिए। 1
उत्तर : 'सिंधु' का अर्थ है–सागर/समुद्र।
4. गोताखोर को मोती कब मिलता है? 1
उत्तर : गोताखोर को समुद्र में गोता लगाने से मोती मिलता है।
5. किसकी हार नहीं होती? 1
उत्तर : हिम्मत करने वाले की हार नहीं होती है।

अथवा

विघ्नों का दल चढ़ आये तो, उन्हें देख भयभीत न होंगे,
अब न रहेंगे दलित दीन हम, कहीं किसी से हीन न होंगे।
क्षुद्र स्वार्थ की खातिर हम तो, कभी न गर्हित कर्म करेंगे,

पुण्य भूमि यह भारत माता, जग की हम तो भीख न लेंगे।

मिसरी–मधु–मेवा–फल सारे, देती हमको सदा यही है, कदली, चावल, अन्न विविध और क्षीर सुधामय लुटा रही है।

1. किसके आने पर भयभीत न होंगे?

उत्तर : विघ्नों के दल चढ़ आने पर भयभीत न होंगे।

2. कवि क्या आशा करता है?

उत्तर : भारतवासी किसी से पद–दलित न होंगे और किसी से हीन न होंगे।

3. 'भयभीत' शब्द में कौन–सा समास है?

उत्तर : तत्पुरुष समास।

4. भारतवासी गर्हित कर्म (निंदनीय कर्म) किसकी खातिर नहीं करेंगे?

उत्तर : भारतवासी क्षुद्र स्वार्थ की खातिर गर्हित कर्म नहीं करेंगे।

5. भारतमाता हमको क्या–क्या देती हैं?

उत्तर : भारतमाता हमको मिसरी, मधु–मेवा–फल, कदली, चावल, विविध अन्न और खीर (दूध) देती है।

खण्ड – ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 7

1. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

उत्साह, सुचारु, अधर्म

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	उत्	साह
2.	सु	चारु
3.	अ	धर्म

2. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

कालिमा, चतुराई, भारतीय

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	काल	इमा
2.	चतुर	आई
3.	भारत	ईय

3. किन्हीं तीन शब्दों के विग्रह करके समास का नाम लिखिए– 3

रसोई, महाजन, पंचतंत्र, लंबोदर

उत्तर :

	विग्रह	समास का नाम
1.	रसोई के लिए घर	तत्पुरुष
2.	महान है जो जन	कर्मधारय
3.	पाँच तंत्रों का समाहार	द्विगु
4.	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेश जी	बहुव्रीहि

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 4

1. अर्थ के आधार पर किन्हीं दो वाक्यों में भेद लिखिए–2

1. मजदूर ने परिश्रमपूर्वक काम नहीं किया।

उत्तर : निषेधवाचक

2. बहुत से अधिकारी ईमानदार होते हैं।

उत्तर : विधानवाचक

3. संभवतः इस साल अच्छी वर्षा होगी।

उत्तर : संदेहवाचक

2. निर्देशानुसार किन्हीं दो वाक्यों में परिवर्तन करके लिखिए– 2

1. क्या सुमन बहुत अच्छा पत्र लिखती है। (इच्छावाचक में)

उत्तर : मेरी इच्छा है कि सुमन बहुत अच्छा पत्र लिखे।

2. चार दिन से लगातार वर्षा हो रही है। (प्रश्नवाचक में)

उत्तर : चार दिन से लगातार वर्षा कहाँ हो रही है?

3. चोरों ने सारा घर साफ कर दिया। (विस्मयादिवाचक में)

उत्तर : हाय! चोरों ने सारा घर साफ कर दिया।

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं चार के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए– 4

1. मैया मैं तो चंद्र–खिलौना लैहों।

उत्तर : रूपक अलंकार

2. पद्मावती सब सखी बुलाई। मनु फुलवारी सबै चलि आई।।

उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

3. देख लोग साकेत नगरी है यही।
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।।

उत्तर : अतिशयोक्ति अलंकार

4. मंगन को देखि पट देत बार–बार।

उत्तर : श्लेष अलंकार

5. रघुपति राघव राजाराम। पतित पावन सीताराम।

उत्तर : अनुप्रास अलंकार

खण्ड – ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 30

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस जमाने में भी पाँच रुपए से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की

कीमत और बढ़ गयी है और एक जूते पर पच्चीसों टोपियाँ न्यौछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के अनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान कथाकार, उपन्यास–सम्राट, युग–प्रवर्तक, जाने–क्या–क्या कहलाते थे, मगर फोटों में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है।

1. लेखक को कौन–सी विडंबना चुभी और क्यों? 2

उत्तर : लेखक को यह विडंबना चुभी कि प्रेमचंद जैसा महान साहित्यकार, जिन्हें उपन्यास–सम्राट, युग–प्रवर्तक, महान कथाकार और न जाने क्या–क्या कहा गया, परन्तु पहनने के लिए साबित जूता भी न जुटा पाया। उन्हें गरीबी में जीना पड़ा।

2. 'एक जूते पर पच्चीसों टोपियाँ न्यौछावर होती हैं' उक्ति में क्या व्यंग्य है? स्पष्ट कीजिए? 2

उत्तर : इस उक्ति में यह व्यंग्य है कि आज समाज में जिनके पास पैसा है, उन्हीं का बोलबाला है। जिसके पास धन है, उसी का समाज में मान–सम्मान है। गुणी लोगों को भी उन्हीं के सामने झुकना और गिड़गिड़ाना पड़ता है। समाज में गुणीजनों का उतना सम्मान नहीं है। जितना धनसम्पन्न लोगों का है।

3. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है, इसके लेखक का नाम लिखिए। 1

उत्तर : पाठ–प्रेमचंद के फटे जूते, लेखक–हरिशंकर परसाई।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. महादेवी वर्मा में छात्रावास में जिस बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है, उसे अपने शब्दों में लिखिए। 2

उत्तर : महादेवी वर्मा जिस छात्रावास में रहती थीं, उसमें भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाली बालिकाएँ भी रहती थीं। उनमें से कोई मराठी बोलती थी, कोई अवधी तो कोई बुंदेली भाषा बोलती थी। वे सब बड़े प्रेम से रहती थीं। उनमें जरा भी मन–मुटाव नहीं था।

2. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर प्रेमचंद की वेशभूषा और रहन–सहन पर प्रकाश डालिए। 2

उत्तर : प्रेमचंद गाँव के साधारण किसानों की भाँति जीवन–यापन करते थे। यद्यपि वे राष्ट्रीय ख्याति के कथाकार थे, तो भी उनका रहन–सहन आडंबरहीन था। वे साधारण कुर्ता–धोती पहनते थे। उनके साधारण से जूतों को देखकर उनकी सादगी का परिचय मिल जाता था।

3. 'अँगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है' में निहित व्यंग्य 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : लेखक ने प्रकट रूप से अपनी दुर्दशा को ढक रखा है, परन्तु भीतरी हालत खराब है। दिखने में उसकी आर्थिक स्थिति प्रेमचंद से अच्छी है किंतु सच यह है वह भीतर से दुखी और फटेहाल हैं।

4. अंग्रेज, नाना साहब को दुर्दांत क्यों मानते थे? 'नाना साहब की पुत्री मैना देवी को भस्म कर दिया गया' पाठ के आधार पर बताइए। 2

उत्तर : अंग्रेज नाना साहब को 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख नेता मानते थे। वे यह भी मानते थे कि नाना साहब ने ही बहुत सारे अंग्रेजों और उनके बीवी–बच्चों का वध करवाया था।

5. नदी का साँवला पानी वृंदावन की किन घटनाओं का स्मरण करा देता है? 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : नदी का साँवला पानी वृन्दावन की उन लीलाओं का स्मरण करा देता है जो कभी यमुना के किनारे श्रीकृष्ण ने राधा और उनकी सखा–सखियों के साथ की थीं। यमुना जल को देखकर सबको श्रीकृष्ण की वंशी की मधुर गूंज सुनाई देती है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल।
ध्यान–निद्रा त्यागता है,
चट दबाकर चोंच में।
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया।
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन,
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली।
चोंच पीली में दबाकर,
दूर उड़ती है, गगन में।

1. बगुला जल में टाँग डुबोकर कैसे खड़ा है क्या देखकर ध्यान–निद्रा त्याग देता है? 2

उत्तर : बगुला जल में टाँग डुबोकर ऐसे खड़ा है मानो ध्यानमग्न हो। वह सरोवर में तैरती मछली को देखकर ध्यान–निद्रा त्याग देता है।

2. काले माथे वाली चतुर चिड़िया चतुराई से कैसे मछली को पकड़ती है? 2

उत्तर : काले माथे वाली चतुर चिड़िया बहुत चतुर और फुर्तीली है। वह दूर आकाश से तैरती चमकदार मछली को देख लेती है। वह अचानक तालाब के जल पर आक्रमण करती है और उस मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है।

3. प्रस्तुत काव्यांश किस कविता से लिया गया है? इसके रचयिता का नाम भी बताइए। 1

उत्तर : कविता–चंद्र गहना से लौटती बेर, रचयिता– केदारनाथ अग्रवाल।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. चने के पौधे को ठिगना क्यों कहा है? वह सजकर किस प्रकार खड़ा है? 2

उत्तर : चने के पौधे को ठिगना इसलिए कहा है क्योंकि वे लम्बाई में अधिक ऊँचे नहीं होते हैं। उसके ऊपरी भाग पर गुलाबी फूल ऐसा सज रहा है मानो वह सज–धजकर दूल्हा बना हुआ खड़ा है।

2. मेघों के आने पर गाँव में कैसा वातावरण हो गया है? 'मेघ आए' कविता के आधार पर उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : मेघ के आने से हवा चलने लगी। पेड़ झुकने लगे। आँधी और धूल चलने लगी, नदी बाँकी होकर बहने लगी। बूढ़े पीपल झुकने लगे। लताएँ पेड़ के पीछे छिपने लगीं। आकाश में मेघ छाए और मूसलाधार पानी बरसने लगा। तालाब जल से भर गए।

3. कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा? 'मेघ आए' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : गाँव के लोग पीपल के पेड़ को शुभ मानते हैं। इसलिए प्रत्येक गाँव में एक पुराना पीपल का पेड़ जरूर होता है। पीपल का पेड़ पुराना होने के कारण उसे बड़ा बुजुर्ग कहना उचित ही है।

4. कवि को दक्षिण दिशा की याद लगातार बनी रही और पहचानने में कभी कठिनाई क्यों नहीं हुई? 'यमराज की दिशा' कविता के आधार पर बताइए। 2

उत्तर : कवि की माँ ने बचपन में उसे दक्षिण दिशा की अच्छी तरह से पहचान करा दी थी। और उसके खतरों के बारे में भी समझा दिया था। कवि को उसकी याद लगातार बनी रही इसलिए उसे पहचानने में कभी कठिनाई नहीं हुई।

5. बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। 2

उत्तर : मेरे विचार से बच्चों को काम पर बिल्कुल नहीं भेजा जाना चाहिए। क्योंकि बच्चे कम उम्र के होते हैं। उनका मन बड़ा भावुक होता है। बचपन की उम्र खेल. ने–खाने और सीखने की उम्र होती है। उन्हें भरपूर प्यार और संरक्षण की जरूरत होती है। बच्चों को पढ़ने–. लिखने, खेलने–कूदने, घूमने–फिरने और मनोरंजन के पूरे–पूरे अवसर मिलने चाहिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 4

1. आपके विचार से माटी वाली के अधिकारों की सुरक्षा किसे करनी चाहिए? समाज को या सरकार को? 2

उत्तर : मेरे विचार से माटी वाली के अधिकारों की सुरक्षा करने का दायित्व दोनों को है। माटी वाली अबोध है, अपने अधिकारों का उसे ज्ञान नहीं है। उसे किसी से कुछ भी माँगना अपने स्वाभिमान के विरुद्ध लगता है। अतः उसके अधिकारों की सुरक्षा की जिम्मेदारी समाज और सरकार की होनी चाहिए। सरकार मुख्य रूप से अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती।

2. लेखिका की परदादी के उन मूल्यों का उल्लेख कीजिए, जिन्हें आप अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे। 'मेरे संगत की औरतें' पाठ के आधार पर उत्तर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : लेखिका की परदादी के जिन मूल्यों को मैं अपनाना चाहूँगा वे इस प्रकार हैं–

1. **दानशीलता–** लेखिका की परदादी दो के अलावा तीसरी धोती दान कर देती थीं। उसी तरह मैं भी दूसरों–जरूरतमंदों की मदद करना चाहूँगा।
2. **सहृद्यता–** लेखिका की परदादी ने चोर को पुलिस के हवाले करने की बजाय उसे सुधरने का मौका दिया, मैं भी इसी तरह दूसरों के साथ सहृदय बनूँगा।
3. **ईश्वर में आस्था–** मैं भी लेखिका की परदादी की तरह ईश्वर में आस्था रखूँगा।
4. **व्यापक दृष्टिकोण–** लेखिका की परदादी ने अपने व्यापक दृष्टिकोण का परिचय देकर लड़के–लड़की में भेद नहीं समझा। मैं भी उन्हीं की भाँति व्यापक दृष्टिकोण रखूँगा।

3. 'आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं' इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों को बताना चाहती है? 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : इस कथन के माध्यम से उमा शंकर की निम्न कमियों को बताना चाहती है–

1. शंकर बिना रीढ़ की हड्डी के है अर्थात् व्यक्तित्वहीन है। वह पिता के इशारों पर चलता है। वह पिता की हर उचित–अनुचित बात को मानता है। ऐसा व्यक्ति पति होने योग्य नहीं है।
2. शंकर लड़कियों के पीछे लग–लगकर अपनी रीढ़ की हड्डी तुड़वा बैठा है। अतः वह अपमानित, लपंट और दुश्चरित्र है।

खण्ड – घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200–250 शब्दों में निबन्ध लिखिए– 10

(1) अनेकता में एकता : हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता

संकेत-बिन्दु : सांस्कृतिक का अर्थ • भारतीय संस्कृति में विविधता • अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ • भारत में अनेक धार्मिक मत • भारत में एकरूपता • उपसंहार।

(2) बाल श्रम

संकेत-बिन्दु : भूमिका : बालश्रम क्या है • बालश्रम के कारण • बालश्रम के परिणाम • बालश्रम रोकने के उपाय • उपसंहार।

(3) यातायात के नियम

संकेत-बिन्दु : प्रस्तावना • चौराहों पर बत्ती तथा अन्य व्यवस्था • वाहनों को निर्धारित गति में चलाना तथा अन्य सावधानियां • उपसंहार।

उत्तर :

(1) अनेकता में एकता : हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता

संकेत-बिन्दु : सांस्कृतिक का अर्थ • भारतीय संस्कृति में विविधता • अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ • भारत में अनेक धार्मिक मत • भारत में एकरूपता • उपसंहार।

1. **सांस्कृतिक का अर्थ-**

यूनान मिस्त्र रोमां सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाकह नामो निशां हमारा।।

इस कथन में देशभक्ति नहीं है बल्कि हमारी सांस्कृतिक परम्परा का यथार्थ है, जो युगों-युगों से स्वच्छ अविरल धारा के समान प्रवाहमान रही है और आगे भी रहेगी। विश्व में भारत ही ऐसा देश है जिसकी संस्कृति समृद्ध कहलाती है। लेकिन आचार-विचार तो उसका बाह्य रूप है भीतरी रूप से मानव का शेष प्रकृति के साथ तादात्म्य है। संस्कृति का समानार्थक शब्द 'कल्चर' भी है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के कल्टस और कल्टुरा शब्दों से हुई जिसका अर्थ है- कृषि करना।

2. **भारतीय संस्कृति में विविधता-** संस्कृति को परिभाषित करते हुए डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है-संस्कृति विवेक बुद्धि का, जीवन को भली प्रकार जान लेने का नाम है।

अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंश बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ-साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी भावी पीढ़ियों के लिए छोड़ जाते हैं। संस्कृति हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए हैं तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभव का हाथ है। संस्कृति हमारा पीछा जन्म-जन्मांतरों तक करती है।

संस्कृति वैविध्यपूर्ण है। भाषा, धार्मिक विचार, जाति, बहुजातीय समाज सभी में विविधता है, किन्तु इनमें प्रारम्भ से ही समन्यात्मकता भी है। भारत में प्राचीनकाल से ही विदेशी-आर्य, यवन, यूनानी, शक, हूण, कुषाण, अरबवासी, तुर्क, मंगोल, अंग्रेज, फ्रांसीसी, डच आदि आए लेकिन सभी आक्रमणकारी अन्ततः भारतीय बन गए।

3. **अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ-** भारत में अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ हैं। भारत को प्रायः 'भाषा का अजायबघर' कहा जाता है। यहाँ लगभग 180 बोलियाँ बोली जाती हैं। इन सबके बावजूद भारतवासी एक हैं। भारत की समन्वय की भावना एकरूपता की भावना पर आधारित है। अनेकता में एकता का अनुसंधान हमने प्रारम्भ किया है। भारत की एकता वह सम्पूर्णता है जो माँ की तरह सतत काम-दुधा है। नदी की तरह सतत प्रवाहमान और प्रगतिशील है। उससे जुड़कर ही हम छोटे-बड़े की भावना को भूलकर अपने को देवता से भी अधिक भाग्यशाली मानते हैं।

4. **भारत में अनेक धार्मिक मत-** भारतीय समाज में सदा से अनेक धार्मिक मत-मतान्तर साथ-साथ विकसित होते रहे हैं। भारत में हिन्दू, बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव आदि अनेक मत-मतान्तर रहे हैं। भारतीय संस्कृति की परम्परा में विविधता के मध्य एकता की स्थापना करने की क्षमता है। वेदों में कहा गया है-'वसुधैव कुटम्बकम'। यह अनेकता में एकता विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों में परिलक्षित होती है।

5. **भारत में एकरूपता-** भारतीय समाज में एकरूपता का पुट है। यद्यपि भारत में हिन्दू, मुस्लिम, सिख ईसाई, यहूदी, जैन और बौद्ध आदि सामाजिक इकाइयाँ हैं, जिनके अपने-अपने सामाजिक आचार-विचार, जीवन-दर्शन, धार्मिक विश्वास, परम्परा और रीति-रिवाज हैं, फिर भी उनमें पारस्परिक संबंध उदार तथा सहिष्णु हैं। सभी धर्म के लोग अपने-अपने त्यौहार मनाने के लिए स्वतंत्र हैं।

6. **उपसंहार-** भारतीय संस्कृति अध्यात्मवादी है अतः उसका स्रोत कभी सूख नहीं सकता। वह निरंतर अलख जगाती रहती है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आनंद से जोड़ती रहती है। उसकी चेष्टा मानव-जीवन को नव-से-नव ज्योति, बल, संगीत, स्नेह उल्लास और उत्साह से भरने की है। यही इस संस्कृति की सबसे सशक्त विशेषता है। वस्तुतः पर्व, उत्सव और त्यौहार ही इस संस्कृति की अन्तः अभिव्यक्ति है।

(2) बाल श्रम

संकेत-बिन्दु : भूमिका : बालश्रम क्या है • बालश्रम के कारण • बालश्रम के परिणाम • बालश्रम रोकने के उपाय • उपसंहार।

1. **भूमिका : बालश्रम क्या है-** बालश्रम बच्चों द्वारा अपने बाल्यकाल में किया गया श्रम या काम है जिसके बदले उन्हें मजदूरी दी जाती है। बालश्रम

भारत के साथ सभी देशों में गैर कानूनी है। बालश्रम एक अभिशाप है जिसने अपना जाल पूरे देश में बिछा दिया है कि प्रशासन की लाखों कोशिशों के बाद भी यह अपना प्रचंड रूप धारण करने में सफल रहा है। यह हमारे समाज के लिए कलंक बन चुका है। किसी भी बच्चे के बाल्यकाल के दौरान पैसों या अन्य किसी भी लोभ के बदले में करवाये गये काम को बालश्रम कहा जाता है। इस प्रकार की मजदूरी पर अधिकतर पैसों या जरूरतों के बदले काम किया जाता है। बालश्रम पूर्णरूप से गैर कानूनी है। इस प्रकार की मजदूरी को समाज में हर वर्ग द्वारा निंदित भी किया जाता है। लेकिन इस तरह का अभ्यास हम समाज वाले ही करते हैं। जब बच्चों को उनके परिवार वालों से दूर रखकर उन्हें गुलामों की तरह पेश किया जाता है। अगर सामान्य शब्दों में समझे तो जो बच्चे 14 वर्ष से कम आयु के होते हैं उनसे उनका बचपन, खेलकूद शिक्षा का अधिकार छीनकर उन्हें काम में लगा कर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से प्रताड़ित कर कम रुपयों में काम कराकर शोषण करके उनके बचपन को श्रमिक रूप में बदल देना ही बालश्रम कहलाता है।

2. **बालश्रम के कारण–** आज के समय में बालश्रम पूरे देश में फैल चुका है। हमारे समाज में सरकार द्वारा चलाए गए नियमों के बाद भी गंदी आदत समाज से छूटती ही नहीं है। भारत की ज्यादातर आबादी गरीबी से पीड़ित है। कुछ परिवारों के लिए भरपेट खाना खाना भी एक सपना–सा लगता है। गरीबी के कारण बहुत से लोग अपने को भी खो चुके हैं। गरीबी की वजह से गरीब माता–पिता अपने बच्चों को घरों और दुकानों में काम करने भेजते हैं। लेकिन कभी–कभी ऐसे निर्णय बच्चों की शारीरिक और मानसिक अवस्था को झकझोरकर रख देते हैं।

   दुकानदार और छोटे व्यापारी बच्चों से काम तो बड़ों जितना करवाते हैं लेकिन उन्हें कीमत आधी देते हैं। क्योंकि बच्चे चालाक नहीं होते हैं इसलिए उन्हें ज्यादा चोरी और ठग का अवसर नहीं मिलता है। व्यापार में उत्पादन लागत कम लगने की वजह से भी कुछ व्यापारी बच्चों की जिन्दगी बर्बाद कर देते हैं।

   हमारे देश में आजादी के बाद भी बहुत से इलाके ऐसे हैं जहाँ के बच्चे आज तक शिक्षा जैसे मौलिक अधिकार से वंचित हैं। हमारे देश में हजारों गाँव हैं, जहाँ पर पढ़ाई की कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है। लेकिन है भी तो कोसों दूर है।

   इस तरह का प्रशासनिक ढीलापन भी बालश्रम के लिए जिम्मेदार है। बच्चों के लिए किफायती अच्छे स्कूलों की कमी से बच्चों को अनपढ़ और बेबस रहना पड़ता है। बहुत से परिवारों का मानना है कि उनके जीवन में कभी अच्छी जिन्दगी लिखी ही नहीं है। वर्षों से चली आ रही मजदूरी की परम्परा ही उनके जीवन व्यतीत करने का एकमात्र स्रोत होता है।

3. **बालश्रम के परिणाम–** एक बच्चे को 1000–1500 रुपए देकर मजदूरी करवाने से कई प्रकार की हानि होती है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चा अशिक्षित रह जाता है। देश का आने वाला कल, अंधकार की ओर जाने लगता है। इसके साथ ही बेरोजगारी और गरीबी और अधिक बढ़ने लगती है। जिस उम्र में बच्चों को सही शिक्षा मिलनी चाहिए, खेल–कूद के माध्यम से अपने मस्तिष्क का विकास करना चाहिए, उस उम्र में बच्चों से काम करवाने से बच्चों का शारीरिक मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक विकास रुक जाता है। शिक्षा के मूल अधिकार से वंचित रखना कानूनन अपराध है। बच्चों से कारखाने में काम करवाना अपराध है।

4. **बालश्रम रोकने के उपाय–** बालश्रम का अंत करने के लिए हमें सबसे पहले अपने घरों और दफ्तरों में किसी भी बच्चे को काम पर नहीं रखना चाहिए। बालश्रम को खत्म करने के लिए सबसे पहले हमें अपनी सोच बदलनी चाहिए। बालश्रम को रोकने के लिए कड़े–से–कड़े कानून बनाए जाएँ और उन पर सख्ती से कार्यवाही की जाए। कोई जुर्माना नहीं, सीधे सजा का प्रावधान होना चाहिए। आखिरकार लोगों को किसी बच्चे की जिन्दगी बरबाद करने का कोई अधिकार नहीं है। सरकार ने गरीब बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा, खाना और कुछ स्कूलों में दवाइयाँ जैसी सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। अगर हमें किसी भी बालश्रम का पता चले तो उसके बारे में पहले बच्चे के माँ–बाप से बात करें और उन्हें समझाए कि इससे बच्चे का भविष्य खराब होगा। और यह कानूनी अपराध है।

5. **उपसंहार–** कैलाश सत्यार्थी सामाजिक कार्यकर्त्ता और 'बचपन बचाओं आन्दोलन' के संस्थापक अध्यक्ष हैं। इस समय वे 'ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर' के अध्यक्ष है। बचपन बचाओ आन्दोलन में लगभग 70,000 स्वयं सेवक हैं, जो लगातार मासूमों के जीवन में खुशियों के रंग भरने के लिए कार्यरत हैं। उन्होंने अब तक 80 हजार से अधिक बच्चों की जिन्दगी बदली है। पिछले दो दशकों से वे बालश्रम के विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं। उन्होंने 'बचपन बचाओ आन्दोलन' की स्थापना 1983 में की। उनके अनुसार बाल मजदूरी महज एक बीमारी नहीं, बल्कि कई

बीमारियों की जड़ है। इसके कारण कई जिंदगियाँ तबाह होती हैं। बालश्रम को रोकने के लिए सरकार ही नहीं वरन् हमारा भी कर्त्तव्य है कि इस योजना में सरकार का पूरा साथ दें। बालश्रम सामाजिक है इसे सभी के द्वारा जल्दी से जल्दी खत्म करने की जरूरत है।

(3) यातायात के नियम

संकेत-बिन्दु : प्रस्तावना • चौराहों पर बत्ती तथा अन्य व्यवस्था • वाहनों को निर्धारित गति में चलाना तथा अन्य सावधानियाँ • उपसंहार।

1. **प्रस्तावना–** हर व्यक्ति अपने जीवन में कहीं भी आने–जाने के लिये सड़क का प्रयोग करता है। हर रोज सड़क हादसों के भी बहुत–से किस्से सुनने को मिलते हैं। ज्यादातर दुर्घटना लोगों की लापरवाही के कारण होती है, जल्दी पहुँचने के चक्कर में और नशा करके वाहन चलाने वाले से उसका जीवन छीन सकती हैं। सरकार ने लोगों की सुरक्षा और सड़क दुर्घटना को कम करने के लिए यातायात के बहुत से नियम बनाए हैं जिनका पालन करना हमारा कर्त्तव्य है।
2. **चौराहों पर बत्ती तथा अन्य व्यवस्था–** सड़क पर पड़ने वाले चौराहों पर अलग–अलग रंग की बत्ती लगाई गई हैं। सबसे ऊपर लाल बत्ती जिसका अर्थ है–रुकना। पीली बत्ती का अर्थ है– चलने के लिए तैयार होना और हरी बत्ती का अर्थ है–चलना। साइकिल और पदयात्रियों के लिए अलग से रास्ता बनाया गया है। एक तरफ सड़कों पर हमें एक पंक्ति में चलना चाहिए क्योंकि अगर हम पंक्ति तोड़ेंगे तो आने जाने में दिक्कत होगी और ज्यादा देर लगेगी। कभी दूसरों से आगे निकलने की होड़ नहीं रखनी चाहिए क्योंकि दुर्घटना से देर भली। यू टर्न लेते समय अपने से पीछे चलने वाले वाहन चालक को हाथ से इशारा कर देना चाहिए। कभी भी बिना पार्किंग के गाड़ी न खड़ी करें चाहे दो मिनट के लिए क्यों न खड़ा करना हो।
3. **वाहनों को निर्धारित गति में चलाना तथा अन्य सावधानियाँ–** वाहन को निर्धारित गति सीमा के अन्दर ही चलाना चाहिए। गाड़ी में सीट बैल्ट का प्रयोग अन्य अनिवार्य है। जगह–जगह पर दिशा दर्शाने वाले चिन्ह बने हुए हैं हमें उनका ध्यान रखना चाहिए। सही दिशा में वाहन चलाना चाहिए। स्कूल कॉलेज आदि के सामने वाहन की गति कम करनी चाहिए।

   लगातार लंबे समय तक हॉर्न का प्रयोग नहीं करना चाहिए और अब तो सरकार ने हॉर्न पर प्रतिबंध लगा दिया है। मुड़ने से पहले लाईट जलाकर इशारा कर देना चाहिए। माँ–बाप को चाहिए कि वह अपने बच्चों को बचपन से ही यातायात के नियमों के बारे में बताएँ। स्कूल में भी इस विषय पर पढ़ाया जाना चाहिए और परीक्षा भी होनी चाहिए। बिना लाइसेंस के किसी भी व्यक्ति को वाहन नहीं चलाना चाहिए और बार–बार गलती करने वाले का लाइसेंस रद्द करना चाहिए। यह सभी नियम सुरक्षा के लिए हैं और हमें इन्हें जिम्मेदारी से अपनाना चाहिए।
4. **उपसंहार–** मनुष्य को सुरक्षित रहने के लिए सड़क के नियम अपनाने चाहिए जिससे मनुष्य सुरक्षित रह सके। वह यातायात के नियमों का पालन करें। स्वयं को सुरक्षित रखकर दूसरों को भी सुरक्षित रख सकें क्योंकि जीवन अनमोल हैं।

12. आपने हाल में ही किसी पर्वतीय स्थल की यात्रा की, जिसका आपको काफी रोचक अनुभव हुआ। इस अनुभव का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र लिखिए– 5

उत्तर :

G-7 सेक्टर 15,
आवास–अशोक नगर,
जयपुर,
दिनांक– 20 अगस्त, 2019

प्रिय राजू

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र मिला। तुम सपरिवार सकुशल हो, जानकर प्रसन्नता हुई। तुम मेरी यात्रा के बारे में जानना चाहते थे, उसी यात्रा के बारे में मैं इस पत्र में लिख रहा हूँ। मित्र, मैं जुलाई महीने के द्वितीय सप्ताह में वैष्णो देवी की यात्रा पर गया था। हम ट्रेन से जम्मू और वहाँ से बस द्वारा सात बजे कटरा पहुँच गए। वहाँ से लगभग 10 बजे रात्रि में कुछ कपड़े लेकर वैष्णों देवी पैदल चलना प्रारम्भ किया। बाण गंगा पार करते ही शुरू हुई इस चढ़ाई में हम अर्धक्वारी, हाथी मत्था, सांझीछत की कठिन चढाई पार करते हुए प्रातः काल वैष्णों देवी पहुँच गए। वहाँ शीतल–जल में स्नान करके सारी थकान दूर हो गई। वहाँ दर्शनकर हम दो घण्टे की कठिन चढ़ाई के बाद भैरों धाम पहुँचे। वहाँ चारों ओर ऊँचे–ऊँचे पहाड़, उनके पास उड़ते बादल, हरे–भरे पेड़ किसी अनोखी दुनिया में होने का अहसास करा रहे थे। सच इतनी मनोरम जगह से लौटने का मन नहीं था पर लौटकर तो आना ही था। कभी अवसर मिले तो तुम भी इस प्राकृतिक सुन्दरता का अनुभव अवश्य करना। शेष ठीक है।

अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
मोहन

अथवा

आपकी परीक्षाएँ निकट हैं। आपके मोहल्ले के धार्मिक स्थल पर लाउडस्पीकर बजता रहता है। जिससे परीक्षा की तैयारी में बाधा पहुँच रही है। इस ओर ध्यान दिलाते हुए किसी दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखिए–

उत्तर :

5, सरदार पटेल मार्ग
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली।
सेवा में,
संपादक महोदय,
अमर उजाला,
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली।
दिनांक– 25 फरवरी, 2019
विषय– लाउडस्पीकर बजने से पढ़ाई में बाधा।
महोदय,

आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से मैं अपने मोहल्ले के धार्मिक स्थल पर बजने वाले लाउडस्पीकर से उत्पन्न शोर की समस्या से लोगों को अवगत कराना चाहता हूँ।

कुछ समय पूर्व यहाँ के लोगों ने एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था। तब मैं भी दर्शन करने गया था। प्रतिदिन अब जब भी मंदिर में भजन या आरती–पूजा होती है तो उसकी तेज आवाज के शोर में हमारी दिनचर्या बुरी तरह प्रभावित होती है। इस शोर और ध्वनि–प्रदूषण के कारण छात्रों की परीक्षा की तैयारी में व्यवधान पड़ रहा है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि इसे अपने सम्मानित–पत्र में स्थान देने की कृपा करें। ताकि धर्मस्थलों के सम्बन्धित व्यक्तियों को यह अहसास हो कि उनके जोर–जोर से भजन–कीर्तन से लोगों को कितनी असुविधा हो रही है। पूजा–अर्चना की विधि में लाउडस्पीकर को शामिल न करें।

सधन्यवाद,
भवदीय
श्रवण कुमार

13. विद्या और सीमा के बीच लड़का और लड़की में भेदभाव पर बातचीत करते हुए संवाद लिखिए– 5

उत्तर :

विद्या– सीमा! आज तुम बहुत उदास दिखाई दे रही हो। क्या बात है?
सीमा– कोई खास बात नहीं है।
विद्या– मैंने तुम्हें इतना उदास कभी नहीं देखा। तुम मुझसे कुछ अवश्य छिपा रही हो।
सीमा– अब तुमसे क्या छिपाना! वही पुरानी बात पर डाँट–फटकार।
विद्या– डाँट–फटकार! तुम्हें किसने डाँटा और क्यों?
सीमा– और मुझे कौन डाँटेगा? मेरी माँ ने डाँटा है।
विद्या– लेकिन क्यों?
सीमा– बस इसलिए कि मैं लड़की हूँ।
विद्या– यह तो कोई बात नहीं हुई। क्या लड़कियों को बिना बात के ही डाँटा जाता है?
सीमा– हमारे समाज में ऐसा ही है। लड़कों को वंश चलाने वाला, परिवार का भरण–पोषण करने वाला और बुढ़ापे का सहारा माना जाता है। लेकिन लड़कियाँ तो पराया धन है, कहकर अपमानित किया जाता है। यह समझा जाता है कि लड़के–लड़कियों से कहीं आगे हैं।
विद्या– लेकिन आजकल बिल्कुल विपरीत हैं। लड़कियाँ लगभग हर क्षेत्र में लड़कों से आगे निकल रही हैं। वे लड़कों से कंधा मिलाकर चल रही हैं। फिर ऐसी सोच क्यों है?
सीमा– हाँ, शायद धीरे–धीरे ही भेदभाव की यह सोच समाप्त हो जाएगी।

अथवा

दूधवाला और ग्राहक के बीच संवाद लिखिए– (मिस्टर सुनील के घर में डॉर बेल बजती है। दूधवाला आता है। सुनील जी उससे बात करते हैं।)

उत्तर :

मिस्टर सुनील– आज तो तुम 11 बजे दूध लेकर आ रहे हो। क्या बात है?
दूधवाला– आज सोमवार है। रास्ते में शिव मंदिर के सामने जाम लगा था इसलिए आने में देर हो गई हैं।
मिस्टर सुनील– देर से आने पर कहीं दूध खराब तो नहीं हो गया?
दूधवाला– नहीं, दूध तो ठीक ही होगा।
मिस्टर सुनील– आज मुझे जरूरी काम से 10 बजे जाना था। तुमने बहुत देर की है।
दूधवाला– बाबू जी! मैं क्या करूँ मंदिर के सामने जाम लगने के कारण देर हो गई।
मिस्टर सुनील– लाओ दूध दे दो।
दूधवाला– हाँ, बाबू जी! यह लीजिए।
मिस्टर सुनील– आज दूध कुछ पतला लग रहा है।
दूधवाला– बाबू जी! ऐसी बात नहीं है। दूध तो रोज की तरह ही है।
मिस्टर सुनील– देखो, दूध पतला नहीं होना चाहिए।
दूधवाला– बाबू जी! 1 तारीख से दूध 4 रुपए प्रति लीटर महँगा हो जाएगा।

WWW.CBSE.ONLINE